



अशफाक चौधरी

मथुरा। सोमवार की शाम को बरसाना की रंगीली गली में लड़ामर होली का उत्सव शुरू हुआ। बरसाना में हुरियारिनों ने नंदगांव के हुरियारों को लाठियों से पीटा। बरसाना वासियों ने उन पर छतों से रंग बरसाया। यह दूधर देख बानों कुछ समय के लिए समय भी ढह गया हो। चुन्होंगे खुशी और रांगों का उत्सव है।

मंगलवार को राधा रानी की नारी बरसाना में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ पहुंची। यह तिल रखने तक की जाह नहीं रही। सड़कों सोंगे से सबबोर रही। श्रद्धालुओं ने होली की उत्सव का भरपूर आनंद लिया। इसमें पैकै पर राधा-कृष्ण के जयकारों से पूरा क्षेत्र गूँज उठा। इससे

पहले हुरियारे प्रिया कुंड से भगवान श्रीकृष्ण के स्वरूप ध्वजा को लेकर

का आनंद उठाने को लालों की संभाली में श्रद्धालु उमड़ आए। कन्के की हर एक गली श्रद्धालुओं के आवामन की चहल पहल की गवाह बनी। गोंदीली गली में तो ऐरे खने को भी जगह नहीं मिली। बालक, युवा और बुद्ध सभी का जोश देखते ही बन रहा था। सुबह से ही प्रद्वाली के गवर बन की परिक्रमा लगाना शुरू कर दिया। परिक्रमा के दैरान श्रद्धालु जोश व मर्ती से नाचते कहरते होते ही बन रहे थे। अधिकारी साल भर जिस दिन का इतजार रहता है वो आ पहुंचा है।

राधा रानी की लीलाओं में खड़े स्थानीय लोगों ने परिक्रमा लगा रहे श्रद्धालुओं पर गुलाल और रंग की बारिश की। श्याम स्थाम मंदिर, गोपाल

जी मंदिर, राम मंदिर, सांकी खोर, विलास गढ, गहर बन, रस मंदिर, मोर कुटी, राधा सरोवर, मान गढ, दानाड और कुशल बिहारी मंदिर से होते हुए परिक्रमारों लालिटी जी के मंदिर में पहुंचा। मंदिर में लोगों ने राधा रानी के चरणों में गुलाल भेट किया। हुरियारिनों सुबह से ही होली की तैयारियों में जुटी हैं। हुरियारिनों का उत्सव देखते ही बन रहा है। अधिकारी साल भर जिस दिन का इतजार रहता है वो आ पहुंचा है।

राधा रानी की लीलाओं में खड़े स्थानीय लोगों ने परिक्रमा लगा रहे श्रद्धालुओं ने एक दूसरे को गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं दी। देश दुनिया में विभिन्न लालों को जाह नहीं रही। श्रद्धालुओं ने एक दूसरे को गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं दी।

**‘मुझे अपने ही रंग में रंग ले दिलादर सांवरे’
आईजी आगरा सहित डीएम और एसएसपी ने भी खेली होली**

दाव उनकी पापा बांधे होते हैं। ऐसा

लग रहा है कि हुरियारे बनने की पंखरा का अगली पीढ़ी को उत्तराधिकार दिया जा रहा है। प्रिया कुंड पर पापा बांधने के बाद हुरियारे एक दूसरे के पापा बांधे होते हैं। जो छोटे बच्चे पहली बार होली खेलने आए हैं तो उनके पापा बांधे होते हैं। यहाँ धोती और बगलबंदी पहने हुरियारे कधेर पर छाल रखे हुए हैं। सप्तसूल आने के चाव में ज्यादातर हुरियारे अपने मुखिया के नेतृत्व में पैदल ही ढाई कोस चले आए। नद भवन से कान्हा की प्रतीक ध्वजा के पीछे पीछे हुरियारे नाचते झूमते गते आये। मुख पसीना झलक रहा है देखिकन थकान की छोटी भी दिखाई नहीं दे गए। कान्हा की प्रतीक ध्वजा को मंदिर

बरसाना की रंगीली गली में बरसाती हुरियारिनें लाठियां

बरसाना लट्ठमार होली : हुरियारिनों की प्रेम पर्णी लाटियां खाने के लिए हर कोई हुआ बेताव, दंग गुलाल से साबोट हुई रंगीली गली

रही है। बरसाना में पहुंचते ही प्रिया कुंड पर सब इकट्ठे हो गए।

बरसाना के गोस्वामी समाज के मुखिया के नेतृत्व में हजारों बरसानावासी उनके स्वागत को जा पहुंचे हैं। भांग की ठंडाई में केवड़ा, गुलाबजल और मेवा घोल कर हुरियारों को पिलाई जा रही है। जो कभी भांग नहीं पीता वो हुरियारा भी आज भांग पिये बिना रह नहीं पाता। यहाँ

पर हुरियारों ने अपने सिरों पर पापा बांधी हैं। प्रिया कुंड के घाटों पर सैकड़ों हुरियारे एक दूसरे के पापा बांधे होते हैं। जो छोटे बच्चे पहली बार होली खेलने आए हैं तो उनके पापा बांधे होते हैं। यहाँ धोती और बगलबंदी

पहने हुरियारे कधेर पर छाल रखे हुए हैं। सप्तसूल आने के चाव में ज्यादातर हुरियारे अपने मुखिया के नेतृत्व में पैदल ही ढाई कोस चले आए। नद भवन से कान्हा की प्रतीक ध्वजा के पीछे पीछे हुरियारे नाचते झूमते गते आये। मुख पसीना झलक रहा है देखिकन थकान की छोटी छोटी छोटी छोटी होते हैं। यहाँ धोती और बगलबंदी

पहने हुरियारे कधेर पर छाल रखे हुए हैं। सप्तसूल आने के चाव में ज्यादातर हुरियारे अपने मुखिया के नेतृत्व में पैदल ही ढाई कोस चले आए। नद भवन से कान्हा की प्रतीक ध्वजा के पीछे पीछे हुरियारे नाचते झूमते गते आये। एक और हुरियारों ने जलादी के लिए इंटरव्यू की तैयारी की। वहाँ धोती और बगलबंदी

पहने हुरियारे कधेर पर छाल रखे हुए हैं। सप्तसूल आने के चाव में ज्यादातर हुरियारे अपने मुखिया के नेतृत्व में पैदल ही ढाई कोस चले आए। नद भवन से कान्हा की प्रतीक ध्वजा के पीछे पीछे हुरियारे नाचते झूमते गते आये। एक और हुरियारों ने जलादी के लिए इंटरव्यू की तैयारी की। वहाँ धोती और बगलबंदी

पहने हुरियारे कधेर पर छाल रखे हुए हैं। सप्तसूल आने के चाव में ज्यादातर हुरियारे अपने मुखिया के नेतृत्व में पैदल ही ढाई कोस चले आए। नद भवन से कान्हा की प्रतीक ध्वजा के पीछे पीछे हुरियारे नाचते झूमते गते आये। एक और हुरियारों ने जलादी के लिए इंटरव्यू की तैयारी की। वहाँ धोती और बगलबंदी

पहने हुरियारे कधेर पर छाल रखे हुए हैं। सप्तसूल आने के चाव में ज्यादातर हुरियारे अपने मुखिया के नेतृत्व में पैदल ही ढाई कोस चले आए। नद भवन से कान्हा की प्रतीक ध्वजा के पीछे पीछे हुरियारे नाचते झूमते गते आये। एक और हुरियारों ने जलादी के लिए इंटरव्यू की तैयारी की। वहाँ धोती और बगलबंदी

पहने हुरियारे कधेर पर छाल रखे हुए हैं। सप्तसूल आने के चाव में ज्यादातर हुरियारे अपने मुखिया के नेतृत्व में पैदल ही ढाई कोस चले आए। नद भवन से कान्हा की प्रतीक ध्वजा के पीछे पीछे हुरियारे नाचते झूमते गते आये। एक और हुरियारों ने जलादी के लिए इंटरव्यू की तैयारी की। वहाँ धोती और बगलबंदी

पहने हुरियारे कधेर पर छाल रखे हुए हैं। सप्तसूल आने के चाव में ज्यादातर हुरियारे अपने मुखिया के नेतृत्व में पैदल ही ढाई कोस चले आए। नद भवन से कान्हा की प्रतीक ध्वजा के पीछे पीछे हुरियारे नाचते झूमते गते आये। एक और हुरियारों ने जलादी के लिए इंटरव्यू की तैयारी की। वहाँ धोती और बगलबंदी

पहने हुरियारे कधेर पर छाल रखे हुए हैं। सप्तसूल आने के चाव में ज्यादातर हुरियारे अपने मुखिया के नेतृत्व में पैदल ही ढाई कोस चले आए। नद भवन से कान्हा की प्रतीक ध्वजा के पीछे पीछे हुरियारे नाचते झूमते गते आये। एक और हुरियारों ने जलादी के लिए इंटरव्यू की तैयारी की। वहाँ धोती और बगलबंदी

पहने हुरियारे कधेर पर छाल रखे हुए हैं। सप्तसूल आने के चाव में ज्यादातर हुरियारे अपने मुखिया के नेतृत्व में पैदल ही ढाई कोस चले आए। नद भवन से कान्हा की प्रतीक ध्वजा के पीछे पीछे हुरियारे नाचते झूमते गते आये। एक और हुरियारों ने जलादी के लिए इंटरव्यू की तैयारी की। वहाँ धोती और बगलबंदी

पहने हुरियारे कधेर पर छाल रखे हुए हैं। सप्तसूल आने के चाव में ज्यादातर हुरियारे अपने मुखिया के नेतृत्व में पैदल ही ढाई कोस चले आए। नद भवन से कान्हा की प्रतीक ध्वजा के पीछे पीछे हुरियारे नाचते झूमते गते आये। एक और हुरियारों ने जलादी के लिए इंटरव्यू की तैयारी की। वहाँ धोती और बगलबंदी

पहने हुरियारे कधेर पर छाल रखे हुए हैं। सप्तसूल आने के चाव में ज्यादातर हुरियारे अपने मुखिया के नेतृत्व में पैदल ही ढाई कोस चले आए। नद भवन से कान्हा की प्रतीक ध्वजा के पीछे पीछे हुरियारे नाचते झूमते गते आये। एक और हुरियारों ने जलादी के लिए इंटरव्यू की तैयारी की। वहाँ धोती और बगलबंदी

पहने हुरियारे कधेर पर छाल रखे हुए हैं। सप्तसूल आने के चाव में ज्यादातर हुरियारे अपने मुखिया के नेतृत्व में पैदल ही ढाई कोस चले आए। नद भवन से कान्हा की प्रतीक ध्वजा के पीछे पीछे हुरियारे नाचते झूमते गते आये। एक और हुरियारों ने जलादी के लिए इंटरव्यू की तैयारी की। वहाँ धोती और बगलबंदी

पहने हुरियारे कधेर पर छाल रखे हुए हैं। सप्तसूल आने के चाव में ज्यादातर हुरियारे अपने मुखिया के नेतृत्व में पैदल ही ढाई कोस चले आए। नद भवन से कान्हा की प्रतीक ध्वजा के पीछे पीछे हुरियारे नाचते झूमते गते आये। एक और हुरियारों ने जलादी के लिए इंटरव्यू की तैयारी की। वहाँ धोती और बगलबंदी

पहने हुरियारे कधेर पर छाल रखे हुए हैं। सप्तसूल आने के चाव में ज्यादातर हुरियारे अपने मुखिया के नेतृत्व में पैदल ही ढाई कोस चले आए। नद भवन से कान्हा की प्रतीक ध्वजा के पीछे पीछे हुरियारे नाचते झूमते गते